श्रीः

भानप्रकाशिका ॥

जिसमें

श्रीराधामाधोजी के लीलाविषयक अनेक प्रकार के राग रागिनियों में अत्यन्त रसीली विरहभरी गानेकी चीज़ें लिखी हैं व सम्पूर्ण रागरागिनियों की व्याख्यान भी सरलरीति से लिखीगई है

जिसको

प्रेमीहरिजनों के हितार्थ श्रीयुत मुन्शीदूधनाथ लालजी आत्मज उदैभानलाल क़स्बारुद्रपूर ज़िलागोरखपूर निवासी ने, बाबूरामदयाल जी, बाबूगुलाबराय रितराजपुरी व बाबू रामप्रसादजी के अनुग्रहसे रचनाकिया

पहिली बार

154

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
फरवरी सन् १९०६ ई०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भूमिका ॥

महाशयो आपलोगोंको भलीभांति स्पष्टहोगा कि इस अवगाह सागर में बड़े २ कबियोंकी बुद्धि कुछ काम न करसकी तो भला मैं मतिमन्द मलीनबुद्धि क्या करसकताहूं परंच उस सर्वशक्तिमान् सच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वरके कि जिसके निमित्त किसी कबिने यों कहाहै (चींटी के पांयमें बांधि गयन्दहिं, चाहैं समुद्रके पारलगावैं) कमलरूपी चरणोंका ध्यान करके अपनी टूटी फूटी भाषामें अत्यन्त सरलतासे राग रागिनियों का व्याख्यान लिखताहूं और आशारखताहूं कि नवीनसे नवीन पाठक गणभी इसको देखतेही मात्र समझलेंगे और अपना मनोरथ पूरा करके इस अधी के परिश्रमको सुफल करके कृपा दृष्टिसे अवलोकन करेंगे—शुभम्—शुभम्—शुभम्

आपलोगों का कृपापात्र

उदयभानलाल—

पेशी क्लार्क सलेमपुर सब डिवीज़न, मुःभाटपार

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भानप्रकाश ॥

सुनिये

रागरागिनियों की उत्पत्ति ॥ इसके बारे में प्राचीन पुस्तकों में बहुतसी भिन्न भिन्न मति हैं (१) मुसल्मानी मतिकेअनुसार (जैसा कि ग़यासुल्लुग़ात में फ़ख़रुद्दीनराजीका बयान दर्ज हैं) इसके उत्पत्ति करनेवाले हकीमफ़िसियागोरस हज़रतसुलेमान बेटा दाऊदके विद्यार्थीरहे। उत्पत्ति इस तरह हुई कि एकरात में इनको आकाशबाणी हुई कि तुम प्रातःकाल नदीकिनारे जाना तुमपर एक नईविद्या प्रकट कीजायगी। आज्ञानुसार हकीम जी वहांगये और इसी सोचविचारमें थे कि देखें कौनसी नई विद्याहै इतने में उनको एक शब्द जैसी कि लोहारके भाथी से निकलती है सुनाईदी इसी शब्द से रागरागिनियां निकालकर उन्होंने इसराइलके सन्तान को सिखलाया और इसतरह दुनियांमें फैलाया ॥

(२) बहुतसी पुस्तकों में यह लिखाहै कि इसकी उत्पत्ति एक पक्षी से हुई जिसका नाम अर्बीमें क़ुक़ुनुस फ़ारसी में आतिशज़न और हिन्दीभाषा में दीपकलाटहै यह पक्षी काफ़पर्वत में रहती है इसकी आयु एकहज़ार वर्षकी होती है इसकी चोंचमें बहुत से छेदहोतेहैं कुछ लोग सात बताते हैं और कुछ लोग तीनसौसाठ कहतेहैं जब इसकी आयु पूरीहोने को होती है तो यह बहुतसी कूड़ा करकट इकट्ठा करती है और उसके चारों ओर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विह्वल होकरनाचनेलगतीहै। और पर फड़फड़ाती है उससमय उसकी चोंचसे उन्हीं छेदों की राहसे अनेक प्रकारके शब्द निकलते हैं जिन्हें छःराग (मेघ, दीपक हिंडोल, श्रीः, मालकोश, भैरो) और इनको रागिनियां कहतेहैं जब दीपकराग निकलताहै तो उस ढेरमें आग लगजाती है और यह पक्षीभी उसी ढेरके साथ जल-भुनकर राखहोजाती है ईश्वरकी महिमा से जब उसरा-खपर पानीपड़ताहै तो एक अण्डाबनजाता है और वर्ष दिन के बाद उस अंडे से बच्चा निकलआता है इसीत-रह उसकी सृष्टि जगत्में चली जाती है॥

प्रकटहो कि जो राग सातोंसुरसे बनतेहैं यानी (स, र, ग, म, प, धा, नी) से उनको सम्पूर्ण कहते हैं, जो इन में से छःसुरोंसे बनतेहैं उनको खाड़ू बोलते हैं और जो पांच स्वरों से बनते हैं उनको ऊढ़ो बोलते हैं॥ ३॥

देखिये सरमाइये अशरत सफ़हा ८॥

हिन्दुओं के मतअनुसार रागोंकी उत्पत्ति श्रीब्रह्माजी सेहै और त्रिभुवनमें प्रचार इसका श्री महादेवजी और श्री नारदजीसे हुआ, बहुतसे पुराने ग्रन्थों में यह लि-खा है कि इसकी उत्पत्ति तोमरसे हुई जो श्रीविष्णुजी महाराजके गन्धर्वथे और बहुतों में उलूक मुनिसे उत्प-त्ति लिखी है जिनका शरीर मनुष्यका और मुंह उल्लू पक्षीकाथा एक समय की व्यवस्था यह है कि नारदजी श्री विष्णुजी महाराजके दरबारमें गानेके लिये गये पर तोमर गन्धर्वकी समता न करसकेउनको बहुतही ग्लान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हुई और उलूक मुनि के पास जाकर सहस्र वर्ष तक गाना सीखा पश्चात् तोमर गन्धर्वके द्वारपर इसअभिलाषासे गये कि अपनागाना उसे सुनाकर लज्जितकरूं और अपना बदलालूं पर थोड़ी बारभी नहीं होनेपाई थी कि बहुत सीपुतलियां लंगड़ी लूली किसी कीएक आंख किसीका सिर नदारद तोमर गन्धर्वका द्वार आ घेरीं तोमरने उन सभोंकी दशा देखकर कारण पूछा पुतलियोंने उत्तरदिया कि यहदशा हमलोगोंकी नारदजी के कुसमय गानेसे हुई अब यदि आप समयानुसार गावैं तो फिर हमलोग ज्यों के त्यों होजावें तोमरने वैसाही किया और वह सब पुतलियां फिर अपनी असली सूरत में आगईं नारदजी शोकसमुद्रमें गोता खातेहुये श्री विष्णुजीके पास पहुंचे—और कहा कि मैंने इतने दिनों तक गाना सीखा पर अबतक मेरी यही दशा बनीरही विष्णुजीने कहा धीरज धरो जब मेरा कृष्णावतार होगा और यही सब राग रागिनियां गोपी ग्वालिन होकर रहस करैंगी तब तुम आना गान सिखलादूंगा जब कृष्णावतारहुआ नारदजी पहुंचे कृष्णजी ने आपही सालभरतक गाना सिखलाया फिर जब गन्धर्व का गाना हुआ उसमें नारदजी भी रहे उससमय उनका गाना सबसे सात सात दर्जा बढ़गया ॥

बहुतसे लोग यह बताते हैं कि इसकी उत्पत्ति चार मतोंसे हुई (१) गणनाथमति (२) भरतमति (३) हनुमान्मति (४) ओम्मति, इनमें हनुमन्तमति बहुत ही विख्यात है ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दक्षिण देशके रहनेवाले नायकों का यह वर्णनहै कि रागरागिनियों की उत्पत्ति ओम् अर्थात् महादेवजीसे हुई महादेवजी से और दैत्यगणों से अतिही मित्रताथी और बहुतसे देव और परियां रातदिन उनको गाना सुनाती थीं उनमें से छःदेव और तीस परियां श्रीमहादेवजी को बहुतही प्रिय थे सो वही छःदेव छःराग हैं और वही तीस परियां तीस रागिनी हैं और जिन जिन समयों में वह आकर गाना सुनाते थे वही उनका समय होगया और जब जब नायक लोग होतेगये उनमें से पुत्र और भार्य्या बनाते गये इसके बारेमें सरमाइये अशरत ग्रन्थके बनानेवाले सादिक़अली साहिब देहली निवासी यों लिखते हैं कि वास्तव में यही ठीकहै और जो मुसलमानों के पैग़म्बरों से निकला हुआ बताते हैं वह मानने योग्य नहीं है क्योंकि अगर यह विद्या (नाद विद्या) किसी वली अथवा पैग़म्बर आदि से निकली होती तो उनके मतिमें अमाननीय न होती बल्कि जैसे हिन्दुओं के यहां पूजा पाठ में गाते बजाते हैं उन केयहां भी गाई बजाई जाती और यह भी लिखा है कि चूंकि मुसलमान लोग हिन्दुस्तानमें आगये इन लोगोंने सीखकर गाना बजाना शुरूकिया ॥

(देखो सरमाइये अशरत सफ़हा ९)

अब जानना चाहिये कि छवो राग यहहैं (१) भैरों (२) मालकोश (३) श्रीः (४) हिंडोल (५) दीपक (६) मेघ और हनुमान्वो भरतमतिके अनुसार इनमें से हरएक के लिये (मै उनके रागिनियां पुत्र और पुत्रकी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भार्य्याओं के) वर्ष के बारह महीने में से दो दो महीने रक्खे गये हैं जिनको–लोग ऋतुकहते हैं इसबारे में भी सादिक़अली लिखते हैं कि गानेवालों को अवश्यही इसका ख़्याल रखना चाहिये क्योंकि अगर कोई इसका ख़्यालरक्खे तो सिर्फ़ यही नहीं कि वह स्रोता गणों को लुभाले बल्कि बहुतसे रोगियों को भी अच्छा करसकताहै जैसे मेघसे तापवालों को व दीपक से शीत आदिवालों को ॥

नीचे लिखेहुए यन्त्र में भरत व हनुमान् मतिके अनुसार हरएकरागोंका पृथक् पृथक्समय महीनों (हिन्दी और अंगरेज़ी) और ऋतुओं में दिखलाया जाताहै ॥

नम्बर नाम रागों का	नामऋतुओंका	नाम हिन्दी महीनों का	नाम अंगरेज़ी महीनों का
१ भैरों	शरद्ऋतु	क्वार, कार्तिक	सितम्बर,अक्टूबर
२ श्रीः	हिमऋतु	अगहन, पूस	नवम्बर,दिसम्बर
३ माल कोश	शिशिरऋतु	माघ, फागुन	जनवरी,फ़ेब्रुअरी
४हिंडोल	बसन्तऋतु	चैत, बैसाख	मार्च,एप्रिल
५ दीपक	ग्रीष्मऋतु	ज्येष्ठ, अषाढ़	मई, जून
६ मेघ	पावसऋतु	सावन, भादों	जुलाई, अगस्त

इनमें से हरएक के इसीमति अनुसार पांच २ रागिनी हैं, आठपुत्र और आठ २ पुत्रकी भार्य्यायें हैं जो कि रागरुख के देखने से साफ़ २ पूरेतौर पर सब प्रकट होजायँगे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यन्त्र नम्बर (२) इसमें हरएक रागकी छः छः रागिनियां बताईगई हैं और ऐसाही आजकलबर्तावमें है,

भैरो रागकी रागिनी भैरवी, रामकली, गुजरी, पठ, गन्धारे, असावरी ,,

मालकोशकी,, बागेसरी, टोड़ी, देसी, सूहा, मुकहरी, मुलतानी,,

हिंडोल की,, पुरिया, बसन्त, ललित, पञ्चम, धनाश्री, मारुआ ,,

श्रीःराग की, गौरी, पूर्वी, गौर, तरिवन, मालसिरी, सिरीः जीत,,

मेघरागकी,, मदमात, गौड़, सिन्ध, सारंग, विधंस, सावन्त, सोरठ ,,

दीपक की, छायानट, हमीर, कल्यान, केदारा, बिहाग, एमन ,,

रागरागिनियों के गानेकासमय दिनप्रमाण ॥

इसका जानना वास्तव में अत्यन्तही कठिनहै क्योंकि कई एक पुस्तकों में किसी रागका एक समय लिखा है दूसरों में दूसरा और बहुधा रागिनियों आदिके समयभी नहींदिये हैं जो लिखेभी हैं तो ऐसे कि जिनको मामूली गानेवाले लोग आजकल गातेही नहीं इसलिये उनमें से सिर्फ़ उन्हीं के समय लिखताहूं जिनका आज कल साधारण प्रचार है और उनके ठिकाने भी लिख दिये हैं कि यह इस रागकी रागिनी, पुत्र अथवा पुत्रकी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भार्य्या है इससे नवीन लोग अवश्यही लाभ उठावेंगे ॥

(रागोंके समयका प्रभावयुत वर्णन)

नामराग ॥

भैरो- इसका समय घंटाभर रातरहे से सूर्य्यनारायणके उदय होनेतक सुनने से औंघी दूरहो, मन प्रसन्नहो सोच व तरद्दुद जातारहै ,,

मालकोश-इसके लिये दो घंटे रातरहे का समय है, सुनने से नैन उनींदे होजाय यही मनचाहे कि, किसी प्यारी सुन्दरी मृगनैनी पिकबैनी को गोद में ले पड़ेरहें ,,

हिंडोल- इसका समय पिछला पहर दिनका, पर इसके लिये संगीत दर्पण के बनानेवाले श्रीः ६ चित्र दामोदर शोनजी ने लिखा है कि बसन्त ऋतुमें हरसमय और दूसरे ऋतुमें दिनके पिछले पहर-सुनने से मनुष्य ऐसे मग्नहों कि सुधबुध भूलजावें ,,

दीपक- इसका समय दोपहर दिनका है, प्रभाव वियोगकी अनल श्रोताओं के हृदयमें प्रकट होकर धँधकै और बेचैन करै अकबर बादशाहके समय से जब तानसेन गन्धर्व ने जलसे भराहुआ चिराग़ जलादिया था यह राग कोई नहीं गाता बजाता सामर्थ्य ऐसी किसीकी न हुई ,,

श्रीः- इसका समय तीसरे पहरका है, एक बजेसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चारबजे तक, मन में प्रसन्नता, उन्माद आदि रोग दूरहों ,,

मेघ--आखिर रातका समय, पावस ऋतुमें जब जल गिरे तब राग रत्नाकर में लिखा है कि आखिर दिनको प्यासदूरहो तापकी बीमारियां दूरहों,, अनेक प्रकार के राग रागिनियों आदिका समय जो आजकल जारी हैं,, शामको चिराग जलते समय कल्यान गाते हैं यह बारह तरहका है, मेघराग का पुत्रहै,,

सातबजे एमन गातेहैं, यह दीपक रागके पुत्रकी भार्य्याहै,, आठबजे रातको और पश्चात् हमीर गातेहैं यह भी दीपक रागके पुत्रकी भार्य्या है, खम्माच इसको कहीं धुनि लिखाहै, और कहीं मालकोश की रागिनी, बिहाग इसका समय आधीरात का है यह दोप्रकार के होते हैं और श्रीःरागके पुत्रहैं, पर्च इसको दोबजे के समय में गाते हैं, यह मेघ रागके पुत्रकी भार्य्या है, सोहनी पर्च के बाद सोहनी श्रीःरागके पुत्रकी भार्य्या कलाँगड़ा धुनि है इसको सोहनी के बाद भैरोके पहले गाना चाहिये, यानी चारबजे रातसे पांच बजेतक में,,

भैरोको पांचबजे से, साढ़े छः या छःही बजेतक जब तक सूर्य्य न उदय हों—भैरवी, यह भैरोकी रागिनी है इसको सूर्य्य उदय होने से पहरभर दिनतक, टोड़ी मालकोश की रागिनी है, यह पहरभर दिनके बाद साढ़े नौबजेतक, बर्वा यह धुनिहै इसको तीनबजे दिनके बाद गातेहैं, इसके पहिले पीलूगाते हैं, यहभी धुनिहै, पूर्वी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हिंडोल के पुत्रकी भार्य्या चारबजे से पांचबजेतक, गौरी यह मालकौश की रागिनी हैं पांचबजे के बाद सूर्य्यास्त तक ॥ शर्माइये अशरत में लिखा है कि इस समय सब राग–रागिनियां पुत्र और पुत्रकी भार्य्यायें एक २ पहर के हिसाब से गाई जाती हैं दोघड़ी रातसे पहरभर दिन तक भैरो, भैरवी, विभास, देसी, ललित, रामकली, गुजरी, देवगन्धार, सुघराई, बिलॉवल, देवसाख, सूहा–पहरभर से दोपहरतक,, टोड़ी, दरबारी, देसीदरबारी, विड़ारी, जौनपुरी, असावरी, योगिया, धनासिरी, जीतसिरी, सारङ्ग, गौरसारङ्ग—

तीसरे पहरको भीमपलासी, मधुमाधवी, नटमारुआ, पूर्वी, तरिवन, जोरातुन्क, गौरी, श्रीःराग ॥

शामसेपहरभररातलक–हमीर, कल्यान, शुधकल्यान, श्यामकल्यान, जीतकल्यान, कामोदकल्यान, हेमकल्यान, भूपाली, एमन, पूरिया । पहरभररातसे अधीरातलक–बिहाग, देस, खम्माच, आधीरात ढलेसे पिछले पहरतक, दरबारी, कान्हरा, सहानाकान्हरा, अकानाकान्हरा, काव्दीकान्हरा, गाराकान्हरा,,

मालसिरी कान्हरा, बिहागड़ा, जैजवन्ती, शंकाभरन, पिछले पहर रातको–पर्च, सोरठ, षट्राग, मारुआ ॥–

–ताल–

गानेवालों के लिये तालका जानना बहुतही जरूरी बातहै इसलिये उनके और बजनतियोंके सुभीते के लिये इस पुस्तक में जितनी गानेंकी चीजें लिखीहैं उनके ऊपर तालके मात्रे भी लिख दियेगये हैं जिसको देखते-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मात्र वे लोग जिनको गाने बजाने का कुछ भी उत्साह है तुरतही समझ लेंगे- भान

बिनय ताल, झपताल ॥

(धिनना धिन २ नाकित ताधिन, धिनना धिन २ नाकिता ताधिन)

अपनही मत ठान, हे मन, अजहुं तो तू मान+हे मन+भ्रमत,इत,उत,फिरत,जूममें,कैसो, निपट, नदान+हेमन+मूर्ख, निपट, निलज्ज, कूर, तू, कस न, भज, भगवान+हे मन+रामचरन, सरोज, की, क्यों, भान, करत, न, ध्यान+हे मन, अजहुं, तो, तू, मान ॥ १ ॥

(खेमटा) (ताल दादरा) धा-दिन्धा-धादिन्ता-२-

राम, भजो, छल, छांड़ि, अरे, मन, मूरख, कूर, गँवार+रे मन, मूरख, कूर, गँवार+झूठो, सब, पितु, मातु, संघाती, झूठो, जगत, व्यवहार+रे मन+क्यों मद, मातो, फिरै, नहिं, जानत, माया, अमित, अपार+रे मन+भान, विपत, साथी, नहिं, कोऊ, राम, को, नाम, अधार+रे मन मूरख, कूर, गँवार ॥ २ ॥

(बिन्यताल) (झपताल) ऊपर ताल लिखाहै ॥

राम भजु राम भजु राम भजु रामरे+राम गुरु मातु पितु राम सब नात हितु रामको नाम अभिराम सुखधामरे+राम भजु+हेर मति, मन्द, तू भान अज्ञान अति जान बिन राम नहिं आवे, कोउ कामरे+राम भजु राम भजु राम भजु रामरे+ ३ ॥

(बिहाग) (तातिताला) ता २ धिन-ता २ धिन

रघुबर रावरो एक आस+जा दिनते जनम्यों या

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जगमें भ्रम भूलेउं भयों नास+कोटिन अघ कियों नेक डरयो नहिं काहूके भय त्रास+अब सब तजि तव शरणान आयों कीन्ह्यों दृढ़ विश्वास+राखिय मान भान की हे प्रभु काटि देहु जम फांस ॥ ४ ॥

(भैरवी) ताः तिताला–ऊपर लिखा है ॥

अजहुं मन सूधो मारग गहुरे–बालापन सब खेलमें खोयो, युवा कियो अघ बहुरे–रामचरणसों नेह न लायो वृद्धभये का चहुरे–अजहुं मन+ हरि हर जपि निर्मलकरु काया पाप दोष सब दहुरे–भान भूल जो भई सो भई अब राम कृष्ण तू कहुरे–५ ॥

(मलार सोरठा) (खम्माच)

(धीमा तिताला–धा क्रितिक धिन २ धा २ तिन २–)

सखीरी सावन आयो मनभावन नहिं आयो+सखीरी+लागे बहन समीर धीर सो मदन अनल धंधकायो+एरी दई अब कैसे रहूं मैं पपिहा बोल सुनायो+सखीरी सावन+ऐसी उन्हैं चहिये नहिं सजनी बिरह के दिवस भरायो+भान कहूं रीझै औरन सँग नाहकही कलपायो+सखीरी सावन आयो ॥ ६ ॥

(मलार देस) ताःतिताला (लिखाहै ऊपर)

बिन पिया घटा घहराये+बारी बैस मोरा जिया घबराये+बिन पिया+उमड़ घुमड़ बरसत मोरे ढिग बेदर्दी बदरा तरसाये+बिन+चपला चमकि २ डेरवावत कोउ नहिं आनि बचाये+बिन पिया+चूक लखे, कछु भान रुठ गये ऐसे समामें न आये+बिन पिया घटा घहराये ॥ ७ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(सेन्दुरा) खम्माच वा बिहाग धीमा तिताला-
ऊपर लिखाहै ॥

उन बिन कैसे कटैंगे कठिन दिन यह सावनके + कैसे सहूंगी चमक चपलाके घमक घनेरे घनके + कठिन + अस कोऊ नाहिं जो लाये सन्देशा प्रीतम मनभावन के + कठिन दिन + देखो भान तुम बिन आपहुंचे मेघवा झरिलावनके + कठिन दिन यह सावन के ॥ ८ ॥

(मलार) सोरठ तिताला ताः ऊपर लिखाहै ॥

हमरे न सैंया आये + कहां रहे छाये + हमरेन + उमड़ घुमड़ घन गरजन लागे मेघवा झरिलाये + दादुर शोर मचाये + हमरेन + पावस कैसे बिताऊं उनबिन योवन ज़ोर जनाये + मानत नाहिं मनाये + हमरे न + भानकहूं नहनेह लगाये + हाय हमैं तरसाये, सवतिन मनभाये + हमरेन सैंयाआये कहांरहे छाये ॥ ९ ॥

(कजली) (ताल तिताला) ऊपर लिखाहै ॥

ऐसे सावनके महिनवा सैंया नहिं आये ए गुइयां + ऐसे + कीनहिं घन गरजे, वहां की नहिं मेघ झरिलाये, ए गुइयां + ऐसे + कीधौं वहां पै पपीहा न बोले, घर की चिताये ए गुइयां + ऐसे सावनके + भानकहूं कोउ रूप लुभाने काऊ बिलमाये ए गुइयां + ऐसे सावनके महिनवा पिया नहिं आये ए गुइयां ॥ १० ॥

(दूसरी)

तोरी बोली ऐ पपिहरा मारे जियरारे हमार + आरे तोरी + जानत नाहिं बलम परदेशे कैसो मूढ़ गँवार +

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पीपीकहै तू हमैं तरसावै तनिक जिया न बिचार+आ-
रेतोरि+पांवपरूं उड़ोजावो इहांते छेड़ो न वारंवार+
सावनमें आवन कह्यो भानजू तव बलु करिहौ पुकार+
आरेतोरी+११ ॥

(फाग बहार) ताःचाचर ॥

(धा२ धिनधा२-धाधा तिनताता)

फागुन आवै न आवैं कन्हैया+कैसीकरूं कोऊ नाहिं
कहैया+हाय उनहिंबिन कैसे कटैंगे जाड़ा गुलाबी पवन
पछुअइया+फागुन आवे+एरीदई दिन कैसे बिताऊं
बारीसी बयस बड़ीसी बलैया+फागुन+भान तुम्हीं
कहो और कोऊ है जो विरहिनिकोहो खबर लेवइया+
फागुन, आवै न आवै कन्हैया ॥ १२ ॥

(दूसराबहार) ताः चाचर ऊपर लिखा है ॥

पांवपरूं मालिन बौर धरौना+कन्त विदेशो बसन्त
करूंना+सोलहो सिंगार अङ्गार उनहिंबिन भावत नहिं
मोहिं बेंदी तरौना+पांवपरूं+जाव लेजाव जलाओ न
मोंका मिलत तुम्हैं कोऊ और घरौना+हाय भान भये
ऐसे बेदर्दी भूलिगये घर यादपरौना *

होली (काफी) तालतिताला-ऊपरलिखाहै ॥

मैया अपनो कांध बरजोरी+होली खेलत मलत मुख
रोरी+चटपट आय झपट लपटाय लेत चोली बन्दत-
रतरतोरी+मैया+ऐसो निडरकरै रगरझगर नित कमर
पकर झकझोरी+मैया+अबतो भानब्रज नाहीं बसौंगी
चपल, छयल मैं,भोरी+सैया ॥ १३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फाग (बरवा) तालचाचर-पहिले लिखाहै ॥

+ आवो बलम तू बिदेशवा में काहे छावो आयो बसन्त बहार+आवो बलम+पापी पपीहा बिरही बोली मारत लैलै नाम तुम्हार+होरामा आयो बसन्त बहार+ बौर देख बौराय गयो जियरा फटत न हियरा हमार+हो रामा आयो बसन्त बहार+निलज प्रान भान नहिं निक-लत तुम्हरे दरशके अधार+होरामा आयो बसन्तबहार*

दूसराताल चाचर ॥

होली जले मैंभी जलजाऊंगी आयो घरां जो न लाल+होलाला+बात यही अब ठानी जिया में सांची कहौं हो गुपाल+होलीजले मैंभी+सौत दईमारी सुख लूटै हम यौंरहैं हा बिहाल+होलाला+आयो+जावो भान तुमहूं सुन लइहो काऊ बिरहीन को हवाल+हो रामा ॥ १४ ॥

होली (जाजवन्ती) ताल चाचर ॥

मनमोहन अजहूं न आय, सखिया कैसेरहूं+मन मोहन+बौर गयो बाग टेसू वन फूलिगयो कोइल कूक सुनाय+सखिया कैसे+लागत मोहिं धमार-कटार सों होली गोली समहाय+सखिया+भान गयउ गाड़ि काहू के नज़र न काहू लियो बिलमाय+सखिया कैसेरहूं १५॥

होली (खमाच) तालझपताला ॥

छयलहो तोरे सङ्ग जब तो फाग खेलूं+छयल+ अवध करू नहिं जाउँ पर घर लेखनी यह लेलूं+जब तो फाग खेलूं+भान सौंहै खवायलूं मैं जब गले भुज मेलूं+जबतो *

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(होली- ता० तिताला)

खेलूं मैंतो नाईं होरी, ब्रजराज आज तोरे साथ कुञ्जन में + खेलूं मैंतो + याही हित लिये सङ्ग सखानको छिपत कुंजनकी खोरी + खेलूं मैंतो नाईं + कैसो निलज्ज कहा बानपरी तोरी कैसी करी बरजोरी + खेलूं मैं + जावो भान मत घूंघट पट खोलो देखो अबहिं मैं भोरी + खेलूं मैंतो *

होली ता० तिताला ॥

तोरी नजरिया सैंया मारडालै की लै

लांगरवा न अब अइहों तोरी खोरी + मोरी बलैया खेलै जाय होरी + बरबस पकरि २ कर ऐंचत मानत नाहिं उपरना खैंचत छोड़ो कलाई करकोरी + मोरी बलैया + तुम तो भान अपनो हठ ठानत ऊंच नीच कछुहू नहिं जानत देखो हँसैं सब गोरी + मोरी बलैया

होली (खमाच) तालचाचर

हेहो कन्हैया तूतो निपट निडर + रंगबोरि दई मोरी सारी चुन्दर + अब कहो कैसे जाऊंघर अपने कैसी करूं तूतो कीन्हों कहर + रंग बोरिदई + ब्रजवासी निरखैं का कहैंगे तूने तो लीन्हो मेरोलाजसगर + रंगबोरिदई + भान मिलेव कहा मोहें छेड़नमें जावो २ मत बोलो जहर + रंग बोर ॥ होली (सेन्दुरा) ताः धीः तिताला

ऐसे होली के दिनन में लाड़ली मान न कीजे + सौंह तिहारी करूंगो जोई कहो अबना करूं मान मान + लाड़ली + पांवपरूं कही मान लड़ेती अपने मनकी न ठान + लाड़ली + भाननेक मुसक्यादे निरखि मोहे निकलजाय अरमान + लाड़ली *

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होली (काफ़ी) आधी हिन्दी, आधी अंगरेज़ी, ताः चाचर ॥

Come dear came होरी—आरेहां + ऐसे दिनन में बलम विलम्बे कहा सुध बुध छोड़के मोरी + What fault have I committed my love! what is cause । कहोरी + बिलग तुम काहे रहोरी—सब सखियां मिलि फाग खेलत हैं, मेलि २ मुखरोरी + How may I enjoy the festival! but thee मानरखोरी + अजहुं तुम आन मिलोरी + —भानु तुमहिं बिन कैसे रहूं अब बिरहा देह दहोरी. Don't think of my deed, O darling, but my age—लखोरी अबहिंमैं दिननकी थोरी + Come dear came होरी ॥ +

होली (खेमटा) तालदादरा ॥

होली खेलत नन्द के लाला लली वृषभान सों + मन मुदित होत रँस चूसि २ अधरानसों + झूमत इतउत मानो मत्तभयो मदपानसों + होली खेलत नन्दकेलाला + नाचत देदे कर तारी आनवो बानसों + होलीगाय परस्पर भान नये नये तानसों + होली खेलत +

(डण्डक) तालचाचर

कहो लाल रैन गंवाये कैसे २ + सवत सङ्ग रङ्ग उड़ाये कैसे २ + लटपट पगकाहे धरत धरनिपर सूखे हैं होंठ बताओ कैसे २ + कहोलाल + को तेरो पाग सुरङ्ग रंगदीनो लाल यह गाल लगाये कैसे २ + भान कहो पहिचान कहांभई नईनई नेह लगाये कैसे कैसे + कहो लाल रैन गँवाये कैसे २ *

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी (जावो२ रेपिया जहांकीन्हो भोरवा) (नाइ नाइ बहियां न डारौ गरवां कीलै) ताल तिताला ॥

जावो२रेपिया जहांरहे रतियां+नाइ नाइ छैला ना छुओ छतियां+अब क्या अबतो सवत मन भागई चलो हटो मोसों न बनाओ मीठीबतिया+नाइ२छैला+भानु+ तुम्हैं कछु लाज न आवत करतरहत नित नइ२ घतिया+ नाइ नाइ छैला न छुओ छतिया *

खेमटा (मानो २ पिया मोरि बतियारे) कीलै ताः दादरा ॥

जानी २ जहां रहे रतियांरे + जावो २ बनाओ न बतियां+ औरन के सङ्ग चैन उड़ाओ तापर हाय हमैं कलपाओ भली सीखली घतियांरे + जानी २ + बान तुम्हारी भान जानपड़ी सौत दईमारी से आंख लड़ी बड़ी बातलगी छतियांरे+जानी २ रहे जहां *

ठुमरी (पियाकी सुरत मोरे मनमें बसी, आली) ताल चाचर

वाकी सुरत अब बसी मोरे मनहाय + आली कहौ काकरौं मैं यतन हाय+टरत न एकहुपल बिसरत नहिं तिरछे तकन मुखमोरि हँसन हाय+बांकी सुरत+एरी दई अबतो खटकत नित पीतबसन वह कटिकी कसन हाय+ भान न भूलत हूलत रहि रहि कावकहूं प्यारी गजसी ग-मन हाय+वाकी सुरत अब बसी मोरे मन हाय+आली*

ठुमरी (सेजातारी ना जइहौं कीलै) ता० धीमातिताला ॥

+मैंना २ मैं जइहों, दधि बेंचन माइ बरसाने में+

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

औचक कान्ह मिल्यो मारगमें सङ्गसखी लिये ज्यों गई हो, घेरलियो कह्यो जाने न दइहौं + मैना + लपटि झपटि मोरि चोलिया मसकडाली जो दुर्गतिकरि काकहिहौंरे, एरी दइआ बिषखाय सोरहिवों + मैंना + अछोभानले चेत किये रहियो औसर पै जो पकड़िपैहों + सब दिन-वांकी कसक मिटाय लैहौं + मैंना २ ॥ +

खेमटा (ता० दादरा) गोरी देले नयनभर काजरा कीलै ॥

लखु आये नगर दोउ लालरी + श्याम गौर दोउ छैल छबीले मस्तानी गज चालरी + क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल मोतिन के उरमालरी + लखु + दशरथ सुत अवधेश लड़ीले भान तिहूपुर पालरी + लखु

(परच) ता० तिताला ॥

गोरी साले हियामें तोरी तिरछीतकन + एकहु पल बि-सरत नहिं काकहुं मन्द मन्द मुख मोरिहंसन + गौरी + झमकि २ पग धरत धरनिपर चलन समय क्या देत फबन + भान उभार नये योवन को देखि वारि दियो, तन मन धन + गोरी *

खेमटा (अद्धा) ता० दादरा ॥

लेगयो मन बरबस छीनरे मोसों नन्द महरको ढोटा + रहेव लुकान सघन कुंजनमें यकलाना कोऊ जोटा + दृष्टि पर्यो माली के धोखे ना जान्यो वह खोटारे + मोसो + चेटक पढ़ि अपनाय लियो तब अब कीन्हौं मन मोटारे + भान परत जब याद सुघर तन रहि रहि उठत कचोटारे + मोसों *

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी (खमाच) ता० तिताला ॥

सजनी सजन नहिं आयो तरसायोरे + ना जानी कौन बिलभायो कहां छायोरे + मग जोहत थाके दृग दोऊ अजहूंन दरस दिखायो + तरसायो + औरनके मन भायो कलपायो मोहैं झूठी २ बातें बतरायो तरसायोरे + भान भली करतूत तुम्हारी सवतन गरवां लगायो + तरसायोरे + सजनी सजन नहिं आयो *

ठुमरी खमाच ताः तिताला ॥

(सवनवां दिनवां बहेला पवनवां ए नन्दी कीलै)

कैसी करूं आये ना सजनवांरे दइआ + दिन नहिं चैन रैन नहिं निदिया, तारे गिनूं ठाढ़े अंगवांरे दइआ + गये परदेश सन्देशो न भेजे, नहकै लै आये गवनवांरे दइआ + भान फंसे सवतन के फन्दे अब लागूं काके गोहनवांरे दइआ +

खेमटा (भूपाली) ता० दादरा ॥

कोइलिया कूकती मदमाती, + अपनी टेरत नेक सुनत नहिं ऐसी कुटिल कुजाती + कोइलिया + मेरो हाल विहाल पिया बिनु तापर दाहत छाती + कोइलिया + भान पराई पीर न जानत, बरबस शोर मचाती + कोइलिया *

ठुमरी, तालतितारा ॥

दईमारी कारी कोइलिया मचावै कहा शोर + सूनो धाम श्याम घर नाहीं घन उमड़्यो चहुं ओर + पी पी कहै तू हमैं तरसावै ऐसी हिये की कठोर + दईमारी + पांव परूं तोरी विनती करत हूं उड़जाजा वोहि ओर +

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

टेर सुनाय चेताओ घर का भान करत जहां भोर + दई मारी कारी*

(वाहीनज़रियारे रखिवो बालमकीलै)

ताल दादरा ॥

मोरे सेजरियारे अइहो बालम + जाव छयल पर भूल न जायो बेगे लैहौ खबरियारे, अइहो + तुमबिन कैसेरहूंगी कहो अब जोहबै कैसे डगरियारे, अइहो + भानहूं चेरी तिहारी सदाकी रखियो याही नज़रियारे + अइहो बालम *

नकटा, ताल दादरा ॥

योवन जनि छुओ फरक रहो लाला + नहिं सरहज नहिं सारी तुम्हारी, नहिं यशुमतिने पाला + योवनज-नि + ऐसो ढीठ डगरमा रोंकत कैसो ढंग निकाला + योवनजनि + मूरख भान हमें नहिं जानो करिडलिहौं तहबाला + योवन जनि *

खेमटा, ताल दादरा ॥

छयलवा, अजब निगोड़ा नित हमका कलपावे + कठिन बेपीर निपट निदरइआ बड़ी २ सौंह तो खावै + सन्मुख हमरे, तापै सवत सँग नैनन मों बतिआवै + छयलवा, बिरहा १ पांव परूं तोरे पतरे बलमुआ, हमरी कहलिया मान + बेरिया के बेरिया न जावो सवति घर तजिदेहु बान कुबान + छयलवा + एरी सखी पिया भान निठुर बड़ मोरी सुरत बिसरावै + हे विधना तेरो काह बिगाड़्यों जो अस दुःख सहावै + छयलवा, बिरहा २ तुम्हारी सुरतिया जबै भूली ऐ छयला पापिन जब मरि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जाय+बिन मोरे मरले सनेहियो नाछुटि हैं, करबोतू केतनो उपाय+छयलवा *

आवो २ नगरिया की, लै,, ता० दादरा ॥

मानो २ कही मोरे प्यारे+पैयां लागूं सुनो ना सतारे +वादे पै वादे करतेहो आते नहीं इधर+माशूक तरह दार मिला क्या कोइ उधर+क्यों न आये सेजरिया हमारे+पहले तो मुकर जातेहो तरसातेहो नाहक़+पीछे से मीठी बातों से बहलातेहो नाहक़+क्यों कहो कहा मन में बिचारे+मानो+बातें बनाओ हम से रहो और के घर पर+अब जान गई भान अड़े औरही दरपर+वारे जाऊं चलनपै तिहारे+मानो मानो कही मोरे प्यारे *

(कलांगड़ा) ताल तिताला ॥

हे सखि कुंवर कन्हैयारे मोरे अंखियन गड़िगयो+ कालिन्दी पै सखा संगलिये रह्यो चरावत गैया+बंशी बजाय प्राण हरिलेगयो अबका करूं एरी दइयारे+मोरि अँखिअन+तबसे एकहु पल कल नाहीं घर आंगन न सोहइया+भान नज़रभर कब देखूंगी कब मिलिहैं यदुरैयारे+मोरी अंखियन *

(खेमटा) ताल दादरा ॥

बना तोरी अजब रसीली आंखैं+चितवनमें चुभि जात करेजे जनु नावककी शाखैं+परीहै बिहाल बाल मिथिलाकी लाख लिये अभिलाखैं+बना+भान मगन चंचल चखनिरखत जन्म सुफलकरि राखैं+ बना*

(दूसरा) ताल दादरा ॥

कुआं पानी न जैहौं की लै—मोरी बांके बना पै नज़र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लागी + वाकी सुरत बिसरत नहिं पल छिन वाहीके प्रेम में रहूं पागी + बरबस उनसे जाय मिलूंगी कुलकी कान सबै त्यागी + अब तो भान यही मन चाहत प्यारी मुरत कहुँ लैभागी * (खेमटा) ताल दादरा—बहारका ॥

कान्हाने बिसरायो दगा कियो + कुब्जाका पटरानी बनायो महिंका योग पठायो + दगा कियो + मन मानी करी भान न मानी हाय हमें कलपायो + दगा कियो *

(विहाग) ताल तिताला ।

बिछुड़न मति दीजो भगवान + बिछुड़ो सिया रामसों बनमां केतिक सही गलान + बिछुड़े राम राजा दशरथ सों तुरतै त्याग्यो प्रान + बिछुड़े मीन वारितें का भयो तड़प्यो मर्यो निदान + भान, जान सँग जात कठिन दुख यह बिशेष पहिंचान + बिछुड़न *

(खेमटा) ताल दादरा ॥

राम करै कहुँ नैन लगै ना + सुन्दर रूप देखि नहिं भूलै कोऊ काहुकै प्रेम पगैना + भान जानलों बात सांच यह देखो बचो कोऊ तोहिं ठगैना + राम करै +

पूरबी (लय) पुरानी ताल दादरा ॥

ठाढ़ी अँगनवां सगुनवां बिचारे गोरी कहुरे सुगना कब अइहैं सजनवां + कहुरे सुगना + हेरे २ सुगना सगुन भल कहियो, दूध भात ना दइहों तोहिं भरि दोनवां + कहुरे सुगना + गोड़वामें दैहों तोरे चंदियाकै घुंघुरू औरु मढ़इहों ना तोरे चोंचवा में सोनवां + कहुरे + भान पियाबिन जिया सहरत नित कैसीकरूं ना, मोरा उमँगै योबनवां + कहुरे *

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी तालतिताला (बिहाग) ॥

सजनी रजनी कटत नहिं उनबिन + बिरह पीर बे धीर कियो अब मदन सतावत छिन छिन + नेह लगाय हाय तजदीन्हों मोहिं अबला अजान गिन + भान भाग कबहोइ है मिलन की कब अइहैं वह, शुभदिन + सजनी रजनी *

(पीलू) ताल तिताला ॥

हमैं ना सतावोरे सांवलिया + बरबस रार मचावत काहे जावो वहीं जावोरे सांवलिया + कुबरी सवतिपियारी भई अबतो हियेसे लगावोरे सांवलिया + भान कपटकी नेह न निबहै केतो बतरावोरे सांवलिया *

(घर आंगन भई भीर रे मनरजना लालाकी लै)

ताल दादरा ॥

काह करूं मोरे बीररे कान्हा मन लैगयो + तिरछी चितवन भौंह बंककरि मारिगयो हिये तीररे + कान्हा मन + तब से पल छिन युग सम बीतत रहि२ उठत है पीररे + कान्हा मन + भान मिलनकी यतन बतादो अब तो भयो बेधीररे + कान्हा मन लैगयो *

(बिहाग) ताल तिताला ॥

अब तो जीवन कठिन भयोरी + सोवत रह्यों सपन देख्यों जनु मोहन आन मिल्योरी + मोतन ताकि कियो चेटकसों कछु पुनि भाग गयोरी + अब + बार २ कहि हे हे लाल जू पै नहिं नेक सुन्योरी + भान सबै यह चूक भागकी, यासे कछुना बस्योरी + अबतो *

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(खेमटा) अद्धा, ताल दादरा ॥

वारूंरे पिया तोरे चलनकी + जावो २ अचराजानि छूओ काम नहीं यह काऊ बड़न की + वारूंरे + सा-ससुनैगी रिसायगी नाहक रोको ना मोरीराह भवनकी + भान कहा यह बान लगायो कहँ सीख्यो कुच कोर म-लनकी + वारूंरे पिया *

(खेमटा) ताल दादरा ॥

बांका सँइयाँ कहा नहिंमानै + समुझाये कछु सम-झत नाहीं अपनी टेक करै जो ठानै + बांका + हमसे तो नितरार मचावत सवतिन प्रेमपगै मनभानै + एरी सखी कहो कैसी करूं मैं भान निठुर पर पीर न जानै + बांका सँइयाँ कहा *

ठुमरी, (बहार) ताल तिताला ॥

प्यारे आवो टुक झलक देखाओ सही + पैयां परतहूं बिनती करतहूं इतनी हमारी तू मानोकही + प्यारे + तुम बिन कछु भावत नहिं मोका तनमनकी सुधि नाहिंरही + प्यारे + और चहो जो करो तुम भानजू सबकी सही यकनाकी नही + प्यारे आवो *

ठुमरी (खम्माच) ताल तिताला ॥

एँजी देखो सँइयां मुरकगई बहियांरे + जावो हटो चलो छेड़ो न नाहक बार २ मैंतो लागौं तेरी पइयांरे + एजी + बरजोरी घूंघट मतखोलो हां हां करो नहिं ऐसी बरिअइयांरे + एजी + भानभये तुम ऐसे हठीले अजहूं गईनहिं तोरी लरिकइयांरे + एजी *

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी (मोहिंका काहे छेड़तकन्हैयाकीलै)
ताल तिताला ॥

महिंका काहे छेड़त मुरारी + चलो हटो दैदूंगी मैं गारी + महिंका काहे + चिकनी २ बातें हमसे औरन से करोयारी + महिंका काहे + छी २ लाल रीझे तुम कापर कुबरी कुजाती भई प्यारी + भानरहे काके भये काके अजब तुम्हारी गतिन्यारी + महिंका काहे छेड़त *

(ठुमरी ताल तिताला)

सन्देश न पाऊं मैं पिया परदेश + कैसी करूं मुख बैनो न आवत मोपै परी सोतो कैसे सुनाऊं मैं + पिया परदेश + नेक दयाकरो कोऊ कहो तो एजी भान दिन रोय गँवाऊं मैं + पिया परदेश *

खेमटा (सोहनी) ताल धीःदादरा ॥

रीसखी नँदलाला किधर गयो + रीसखी + वह यशुमति को बांको छोरा बांसुरी वाला काला किधरगयो + कजरारे बड़ेर, अँखियान सोहनि हम अस ब्रजबाला किधरगयो + भान कान्हकी सुरतगड़ी हिये कैसे बुझै तन ज्वाला किधरगयो + रीसखी *

(श्यामकल्यान) धीःतिताला ॥

फेर बंशी कहुं बाजी + धुन सुनबिकल परी ब्रजबनिताहोय बिवश वहीं भाजी + फेर + कान्ह २ रट लावत मगमां तनिक जिया में न लाजी + फेर + भान तानकी बान लगोहिय भूलगई शिरताजी + फेर *

(खेमटा) ताल दादरा ॥

भागई मन सौत निगोड़ी + याहीतें बिसरायो हम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

का याहीतें सुधबुध सब छोड़ी + भागई + कारो आप कुरूप कूबरी दोउनकी खासी बनी जोड़ी + वाहजू भान निबाह कियो भलु वाहजू वाह भले मुँहमोड़ी *

चैता (चाचर) ताल ॥

चइता नाईं भावै होरामा कि तुम बीनारे + पापी कोइलिया बोले आरे जियरा घबरावै होरामा + कि तुम बिनरे + भान बिरह की आगलगी है आरे कोऊ ना बुझावै होरामा + कि तुम बिनरे *

(दूसरा धीः तिताला)

चइतो में ना अइले होरामा कि बांके सइयांरे + सुध बुध छोड़े मुख मोड़े हमसे हाय पतियोना पठइले होरामा + कि बांके सइयांरे + भान हमें योगिनियां कइले आरे नाहकै तरसइले होरामा + कि बांका सइयां *

(घाटो, ताल चाचर)

अजहूं न आये छयलवारे दइया चइत नियरइलै + पलभरि पलक लगत नहिं उनबिन जोहत बितत गयलवारे दइया + नये नये फैल करत औरन सँग ऐसो भयो बेकहलवारे दइया + चइत + भूले भान मोहि बैठे कहूंपर तनिको, न करत खेअलवारे दइया + चइत *

(बिहाग, ताल तिताला)

मिलन कबहोइहैं हे रघुबीर + बिरह पीर कहो कैसे सहूं अब दाहत मदन शरीर + मिलन + झझक२ चित जात तुम्हीं पर तनिक धरत नहिंधीर + मिलन + व्याकुल भान द्वारपर ठाढ़े आय हरो तो पीर + मिलन कब *

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(दूसरा, ताल तिताला)

सजनी मन हर लैगयो मोर + वह मृदु हँसन वह तकन तिरीछे वह भौंहन की मरोर + सजनी + कटि विशाल की कसन निराली कोमल कुचकी कोर + सजनी + भान ज्ञानकी बात भूल्यो सब दासभयो अब तोर + सजनी *

(लावनी)

मैंगऊ चरावन गयों आज कुञ्जनको, लैगई छबीली छीन हाय मेरे मनको" जब दृष्टि पड़ी वह सुन्दर बांकी गोरी + भाग्यो सब अपनो चैन मैन ने मरोरी + थे गोरे २ गात बयस रही थोरी + आनन जिमि पूनो चन्द दियेरही रोरी + करते थे जुल्फ़ वे आब सावनी घनको + लैगई + थी पहने सारी सुफ़ेद कानों में बारी + चलती थी गजसों मन्द वह प्यारी २ + रही खरी घरीलो मौन भौन पगु धारी + नैनोंके सैन चलाई आह मोहिं मारी + कैगई हाल बेहाल दया नहिं तनको + लैगई + वह चञ्चलसी रही, अञ्चल दाबेमुखमां + क्याकहूं बनाई बिधनाने क्या सुखमा + को कहे कौन जनम्यो अस जग में उपमा + पैभान कियो नहिं ख्याल डालगई दुखमा + सचहै कोउका बसकरे पराये धनको + लैगई छबीली *

(ठुमरी, तिताला)

बतियां मोसे बनाओ + बतियां + जानलई तुमका सब भतियां, अन्तहिं जाय बिताओ रतियां, सौतन का तुम लावो छतियां + बतियां + जाओ जाओ आयो अब मतियां,, भान भली मोसों कियो घतियां, इत उत भेजी प्रेमकी पतियां + बतियां मोसों बनाओ *

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(ठुमरी, ताल तिताला)

आये रसिया रँगीले रसभीने + लटपट चाल उनींदे नैना, अधरन अंजन दीने + आये + बान तुम्हारी सदा की जानपरी आज भान तुम्हैं चीने + आये रसिया *

(ठुमरी)

(ठाकुर से मोरि नेह लगोरी) की, लै ॥

रुद्रपुरी सबके मन भावन + उत्तर दिशि शिवजीको मन्दिर सागर नीर बहत जहँ पावन + रुद्रपुरी + भूपति बिजै प्रतापनरायन जू महराज सतासी सोहावन + धन्य भाग्य जन्मै जो यह पुर भान सुयश तिहुंलोक बढ़ावन *

(भैरवी, ताल तिताला)

हमैं नहिं बिसरत बेसर लटक + मृदु मुखहँसन दशन द्युति दामिनि चाल मराल की मटक + नीलाम्बर की कञ्चुकि बांकी, हरी चून्दरी चटक + कजरारे रतनारे नयन के सैन भान हिये खटक *

(खेमटा, ताल दादरा, धीमा)

हे रघुबीर अपार तोरीमाया + ब्रह्मादिक सनकादि मुनेश्वर हार थके कोउ पार न पाया + छिनमें चाहोक-रोसो दयानिधि धूप जहां प्रगटो वहीं छाया + आयो शरन प्रभु भान तिहारे जानो निजदास करो टुक दाया *

(ताल तिताला)

हे प्रभु राखहु लाज हमारी + दीनानाथ भक्त वत्सल तुम पतितनके हितकारी + जगकारन अरु अधम उधा-रन दुख मोचन सुखकारी + छमिये चूक भान अघखान की रघुवर अजिरबिहारी + हे प्रभु *

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(खम्माच, धीमा, तिताला)

उन श्याम नवल नटनागर की छबि नैनन मां बस गई + हँसन मनोहर मोहनी डाख्यो भौंह मरोर कुजम कै माख्यो काली अलक डस गई + आज मोरे + कहा करूं कछु कहत बनत नहिं बिन देखे मोहिं चैन परत नहिं भान जू अब फँस गई + आज मोरे नैननमां *

(ता० दादरा, होली, श्यामंबिनामनमानतनाहींकीलै)

पांवपरूं रंगडारो नाहिं महिंका दो घरजाने + कान्हा महिंका + तुम तो रसिया छयल छबीले मैंहूं नारि गंवार + गैलनमां, क्यों रोकत टोकत, कैसी बान तुम्हार + कान्हा महिंका + अरज बरज मोरी एकौ न मानी भान भिजोई चीर + हायदई यह का करदीनो आखिर जात अहीर + कान्हा *

(बिहाग की होली ताल चाचर)

फगुआ लिये बिन जाने न दइहों आज भई भली भेंटरे + याद करौ वह दिनकी बातें जा दिन कीनो चपेटरे + पाय अकेली मोहें कुंजगलिन मां योवन रस भले लेटरे + फगुआ + कह गई ललिता बिशाखा कहां गई अबिर गुलाबना फेटरे + भान कसर सब दिनकी चुकालौं लालको खूब लपेटरे + फगुआ *

(कलांगड़ा, ताल तिताला)

छेड़ करत ब्रजराज,, ना दइया मैं अब ना जाऊंगी ना + बरबस पकरि योवन रस लूटत राखत ना कछु लाज + ना दइया + ढीठ लंगर बरजे नहिं मानत गयल-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नमां परेवाज+ना दइया +भानजूको जिय गाढ़में डारै काको गरज कहां काज+ना दइया *

(कजली)

कैसे खेलूं मैं कजरिया मोरे सइआं नाहीं घरवां+ दादुर औरु मोरवा पिया बिन शोरवारे मचावै, झिल्ली झनकै दामिनि दमकै मैं मरिजाऊं डरवां+एक तो आपू रैन अंधियरिया दूजे घेर आई बादरिया तीजे काम करत कादरिया लागूं काके गरवां+भान न भूले तुमरी बतिया रहि २ धरकै हमरी छतिया एरी दइया का करूं पतिया भेजूं काके करवां *

(ताल दादरा, जल्द)

अटके मोरी जान नैना तुम्हींपर अटके+सीख दियो भय भेद बतायो हटकायौ नहिं हटके+माधुरी मूरत देखि चकित ह्वै भूले लटू भये लटके+तजि कुलकान भान सुनु सजनी माथ द्वार तेरे पटके *

ठुमरी ताल तिताला ॥

(लैलो बिहारीलालहो दहिया मोरी लैलो) कीलै ॥

जाने न दूंगी बिदेशहो पिया जाने न दूंगी–दादुर मोर पपीहा शोर सुन तुम बिन होइहै कलेसहो–पिया जाने न दूंगी+काली २ घटा आय उनई जब तब को दुसह दुख केसहो+पिया जाने न दूंगी+अब तो भान यही जिया ठान्यों पासहि राखो हमेश–हो पिया जाने न दूंगी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होली डफकी ॥

होली है धूम मचावोरे। निधरक होय फगुवा गावोरे॥ राहबाट जोइ युवती मिले, बरबस पकरि लेआवोरे॥ होली है॥ सराबोर सारी करिडारो, गाल गुलाल लगावोरे॥ होली है॥ भान कसक सबहियेकी मिटालो, यामें न नेक लजावोरे॥ होलीहै॥

मलार देश-ताः धीमा तिताला॥

बरसो बदरवा क्योंरे कारे॥ जानिगयो घर नाहिं पियरवा, औसर नीक बिचारे। समझ अनाथ लगे तुम दाहन, बेदर्दी दई मारे॥ बरसो॥ जावो २ अब बहुत होइ गई, ह्यांनहिं काज तुम्हारे, भान बिरह मैंतो आपी मरतहूं, का बिरहिनि के मारे॥ बरसो बदरवा क्योंरे कारे॥

फाग ताल चाचर॥

घर आवैं बलम कहा कागरे-ऐसी होइहैं कि खेलूंगी फागरे-जावो २ काहे बोली सुनावो ऐसी नहीं मोरी भागरे-१-घर आवैं-वे तो कहूं औरन मन भा गये लगन कहूं नई लागरे-२-घर आवैं-हमका जोग हाय सौतनका भान जू दीनो सोहागरे-घर आवैं-

होली ताल झपताला॥

देखो जी न मानो कान + देखोजी-बीच डगर मोंसे होली मचावत, है है लंगर तेरी कैसी परी बान + देखो जी न मानो काम + २-मुख मींजो झट आय, गरवां लगो धाय, ऐसो निलज ढीठ काहे भये भान + देखो जी न मानो कान॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होली ताल तिताला–ऐजां ग़मे दुश्मन में कीलै ॥

आई रंगीली होरी–कैसी करूं कहोरी + १ + हौं तो भई दीवानी, इत उत डोलौं बौरानी, मोपै परो अररानी, लीनें अबीर भरि झोरी–कैसी करूं कहोरी–१–यां भान नहीं, नहिं जानो, अपने मनकी मत ठानो, मेरी कही तो मानो, जावो करो न बरजोरी–२–कैसी करूं कहोरी +

होली ताल तिताला ॥

तोसे बचन दीनों हारी बलमां–कीलै ॥

हौंना खेलूंगी ऐसी होली बलमा–१–औचक भर पिचकारी मारी भीगि गई मोरी चोली बलमा–२–जावो जावो छेड़त मग काहे, काहे करत बोला ठोली बलमा–३–भान तुम्हैं ऐसी जो जानती आती नहीं तोरे टोली बलमा + हौंना खेलूंगी ऐसी बलमा *

इति भानुप्रकाशिका समाप्ता ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor